इकाई 7 कथा साहित्य का अनुवाद

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 कथा साहित्य का अनुवाद

7.3 कथा साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाएँ एवं उनके अनुवाद

7.4 कथा साहित्य के अनुवाद के सांस्कृतिक संदर्भ

7.5 कथा साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ एवं समस्याएँ

7.5.1 पूरी कथा को समेटना

7.5.2 पात्रों का चरित्र–चित्रण

7.5.3 भाषा

7.6 कथा साहित्य के अनुवाद की रणनीतियाँ

7.7 कथा साहित्य के अनुवाद संबंधी कुछ सुझाव

7.8 सारांश

7.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

7.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे :

- कथा साहित्य से क्या तात्पर्य है,
- कथा साहित्य के अनुवाद के सांस्कृतिक संदर्भों से क्या अभिप्राय है,
- कथा साहित्य के अनुवाद में किन–किन चुनौतियों व समस्याओं का सामना करना पड़ता है, तथा
- कथा साहित्य के अनुवाद में किन–किन रणनीतियों को अपनाया जा सकता है।

7.1 प्रस्तावना

पिछली इकाइयों में की गई चर्चा के आधार पर हम जानते हैं कि सर्जनात्मक साहित्य को दो भागों में बाँटा जाता है – कथा साहित्य एवं कथेतर साहित्य। कथा साहित्य से तात्पर्य ऐसे साहित्य से है जो भाव व कल्पना प्रधान हो। ऐसा नहीं है कि कथा साहित्य में तथ्यात्मकता का अभाव होता है। अपितु अस्मिता विमर्श संबंधी विभिन्न संदर्भों में तो कथा साहित्य को समानांतर इतिहास की तरह देखा गया है। लेकिन जब हम कथा साहित्य को भाव व कल्पना प्रधान कहते हैं तब इसका तात्पर्य तथ्यों, सत्यों एवं घटनाओं की प्रस्तुति से है। यह प्रस्तुति अपने मूल स्वरूप में भावप्रधान होती है जिसका उद्देश्य केवल इतिहास की तरह सूचना प्रदान करना नहीं है अपितु हमारे समाज के विभिन्न सत्यों को भावात्मक रूप में प्रस्तुत करना है ताकि वह अधिक

प्रभावकारी हो सके। इसके साथ ही, कल्पनाशीलता से तात्पर्य कथ्य की प्रस्तुति से है। इसमें कथा की प्रस्तुति के साथ–साथ भाषा का सौंदर्य तत्व भी है जो किसी रचना को अधिक प्रभावधर्मी बनाने में सबसे अधिक सहायक है।

जहाँ तक कथा साहित्य के अनुवाद का संबंध है, इसमें अनुवादक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह रचनाकार तथा रचना – दोनों को आत्मसात कर उसे अपनी भाषा में पुनःप्रस्तुत करे। इसीलिए अक्सर, सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद को पुनःसृजन अथवा नवसृजन भी कहा जाता है।

प्रस्तुत इकाई में हम कथा साहित्य के विभिन्न आयामों के साथ–साथ कथा साहित्य के विभिन्न भाषाओं में हुए अनुवाद की परंपरा को देखेंगे तथा साथ ही इसकी भी चर्चा करेंगे कि कथा साहित्य के अनुवाद में अनुवादक से किन–किन तत्वों की अपेक्षा की जाती है तथा बेहतर अनुवाद किस प्रकार किया जा सकता है।

7.2 कथा साहित्य का अनुवाद

विश्व की भिन्न भाषाओं के बीच अनुवाद के माध्यम से जो संवाद और समन्वय का संबंध बनता है, वह भाषा और साहित्य की उदार संस्कृति को जन्म देता है। आज विश्व के किसी भी कोने में जब कुछ घटता है तो हम उसे तुरंत जानना चाहते हैं। जैसे अभी अंग्रेजी कवयित्री लुईसग्लक को या विगत वर्षों में पोलिश कथा लेखिका ओल्गातो कार्चुक को साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार दिए जाने की घोषणा के साथ ही पूरे विश्व में अपनी–अपनी भाषा में इनकी कृतियों को पढ़ने की माँग एकदम बढ़ी। इस घटना से अनुवाद की आवश्यकता और महत्ता स्वतः स्थापित होती है। अनुवाद ही वह माध्यम है जिससे दो संस्कृतियों के बीच एक पुल बनता है और हम अनुभव कर पाते हैं कि पूरा विश्व एक ही समाज है तथा समस्त साहित्य मानवीय भावनाओं का आख्यान है। अनुवाद, संवाद की संभावना है और संभावनाओं की पारस्परिकता भी।

ज्ञान के क्षेत्र में अनुवाद जहाँ विषय–बोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं, वहीं साहित्यिक अनुवाद संरचना एवं भाषा की बहुस्तरीय अर्थ व्यंजक क्षमताओं का प्रतिमान उपस्थित करते हैं। कथा साहित्य जीवन की अभिव्यक्ति है और उसका अनुवाद, उसकी अर्थ बहुलता को विस्तार देकर समय के लम्बे अंतराल में उसे प्रासंगिक बनाए रखता है। यही अर्थ बहुलता अन्य भाषा में उस रचना की मान्यता का आधार भी बनती है।

कथा साहित्य में जितना महत्व कथा का होता है उतना ही महत्व उसके पात्रों, चरित्र चित्रण और परिवेश निर्माण का भी होता है। कथा साहित्य सीधी सरल विधा न होकर बहुपरतीय विधा है जिसमें अनेक पात्रों का जीवन उनके अनुभवों, संवेदनाओं, परिस्थितियों के समन्वय में विकसित होता है। सामाजिक पृष्ठभूमि एवं पात्रों को लेखक बड़े जतन से एक साथ बुनता है। समय एक कैनवस की तरह पूरे आख्यान की पृष्ठभूमि का वितान बनता है और उस समय में जीते–जागते पात्र, मानवीय स्वभाव एवं संवेदना की अलग इकाई के रूप में एक ग्राफ की तरह समय और समाज की पृष्ठभूमि पर अंकित किए जाते हैं। विचारधारा और दृष्टिबोध के स्तर पर लेखकीय हस्तक्षेप की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। लेखक अपने लिए जिस शैली और भाषा के प्रयोग को चुनता है वह पूरी कथा में अलग दिखाई पड़ते हैं। यह सब लेखक के हस्ताक्षर की तरह है। समय और समाज की नब्ज को पकड़ते हुए लेखक

उन पात्रों की धड़कन की आवाज भी पाठक को सुनाता है। रचनात्मक साहित्य की दृष्टि से यह किसी भी कथा–कहानी की महत्वपूर्ण उपलब्धि है जिसे अनुवादक को कथा–साहित्य का अनुवाद करते हुए दूसरी भाषा में उसी तरह जीवंत करना होता है। इस दृष्टि से कथा साहित्य के अनुवाद के लिए विशेष प्रतिभा की आवश्यकता होती है क्योंकि इसमें केवल भाषाओं का ज्ञान ही आवश्यक नहीं है अपितु सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ठीक से समझना भी अनिवार्य है।

अनुवादक के लिए जितना जरूरी यह है कि वह मूल पाठ को समझे और सही अर्थ ग्रहण करे उतना ही यह भी आवश्यक है कि दूसरी भाषा में वह उसे इस तरह निर्मित करे कि अनुवाद का पाठक भी मूल लेखक के सही मंतव्य को समझ पाए। कुछ लोगों का मानना है कि कथा साहित्य का अनुवाद कविता के अनुवाद की अपेक्षा सरल है। कविता में छंद, बिंब, प्रतीक और रूपक को ठीक–ठीक दूसरी भाषा में उतारना अत्यंत कठिन है जबकि कथा साहित्य गद्यात्मक होने के कारण अनुवाद के लिए अनुकूल और सुविधाजनक है। इस बात में कुछ सच्चाई होते हुए भी यह सही नहीं है। कथा साहित्य रचनात्मक विधा है और जैसा हमने पहले कहा, उसकी रचना अत्यंत संश्लिष्ट है जिसमें अनेक तत्व एक साथ सक्रिय रहते हैं। कथा की व्यंजकता अनेक स्तरों पर घटित होती है। उस सबको अनुवाद में रूपायित करना उतना ही चुनौतीपूर्ण है जितना कि कविता या अन्य सर्जनात्मक विधा का अनुवाद।

कई बार कथा साहित्य में इंटरटेक्स्चुएलिटी अर्थात अंतःपाठीयता का इस्तेमाल होता है। अंतःपाठीयता से अभिप्राय यह है कि एक पाठ का संबंध किसी अन्य पाठ से है। उसको जानने से ही पूरा अर्थ स्पष्ट होता है। एक ही पाठ के अनेक पाठ हो सकते हैं और उसी आधार पर अनेक अर्थ खुल सकते हैं लेकिन एक संदर्भ को समझने के लिए दूसरे संदर्भ को जानना जरूरी है। ऐसी स्थिति में अनुवादक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह कृति से संबंधित अंतःपाठ का सम्यक वहन करे। इस बात की ओर भी ध्यान देना होगा कि एक संदर्भ में जो बात उठी है, वही जब दूसरी बार आएगी तो उनका तारतम्य नष्ट नहीं होना चाहिए। जादुई यथार्थवाद तथा फंतासी से युक्त रचनाओं में संभव है कि कार्य–कारण श्रृंखला न रहे लेकिन व्यापक परिदृश्य में देखें तो आंतरिक अंतःसूत्र बना रहता है और उसे ही अनुवाद में बचाए रखना है। मार्खेज़ के कथा साहित्य के अनुवाद इस दृष्टि से देखे जा सकते हैं। इस दृष्टि से एक उदाहरण उदय प्रकाश की कहानी *'वॉरेन हेस्टिंगस का साँड़'* देखा जा सकता है। लेखक ने औपनिवेशिक और उत्तर–औपनिवेशिक इतिहास को बताने के लिए विक्टोरिया मेमोरियल की एक पेंटिंग, इतिहास में दर्ज वॉरेन हेस्टिंगस के समय के दस्तावेज, लॉर्डक्लाइव की चिट्ठी आदि सूत्रों से एक अद्‌भुत आख्यान रचा है। यह कहानी अनेक सूत्रों के अंतःपाठों को पकड़ते हुए अतीत और वर्तमान के बीच जिस तरह का कथा संघटन संभव करती है उसे अनुवाद में उतारना अत्यंत चुनौती भरा है। इस कहानी के अनेक अनुवाद हुए। अंग्रेजी में वर्जीनिया यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर रॉबर्ट ए हुयुक्स्टेड ने इसका अनुवाद किया। हंगेरियन भाषा में मारिया नागेषि, उर्दू में हैदर सैयद जाफरी तथा मराठी में जयप्रकाश सावंत ने इसका अनुवाद किया। सभी अनुवादकों ने अनुवाद की अलग–अलग पद्धतियाँ अपनाईं लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि सबने स्वीकार किया कि इस कहानी के विविध संदर्भों की वजह से अनुवाद के लिए उन्हें बहुत मेहनत करनी पड़ी।

7.3 कथा साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाएँ एवं उनके अनुवाद

कथा साहित्य के अनुवाद की लंबी परंपरा है। यूँ तो यदि लोक–कथाओं के रचना संसार में देखा जाए तो एक ही कहानी लगभग सभी भाषाओं में मिल जाएगी। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वाचिक परंपरा में भी कथाओं का आदान–प्रदान होता आया है। अलग–अलग भाषाओं में एक जैसी कहानियाँ रची जाती थीं या फिर संभवतः रचनाओं का भाषिक रूपांतरण होता रहा हो जो एक तरह का अनुवाद ही है। प्रिंटिंग प्रेस और गद्य के विकास के साथ व्यवस्थित ढंग से अनुवाद होने लगे। उपनिवेशवाद के समय में (बहुत सीमा तक औपनिवेशिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए) भारतीय भाषाओं से अंग्रेजी में कई तरह के अनुवाद हुए। भारतेंदु के समय में संस्कृत तथा अंग्रेजी से हिंदी में अनेक अनुवाद हुए। विधाओं का अंतरण करके भी हुए। जैसे शेक्सपियर के *'द टेंपेस्ट'* का हिंदी की पहली कहानी *'इंदुमती'* बन जाना। शेक्सपियर के नाटकों के हिंदी के अनेक वरिष्ठ साहित्यकारों ने अनुवाद किए जिनमें रांगेय राघव, अमृतराय, रघुवीर सहाय शामिल हैं। इसी तरह तमाम रूसी साहित्य का अनुवाद हिंदी में हुआ है जिनमें लियो टॉलस्टॉय, दोस्तोवस्की, गोर्की, नाबोकोव, चेखव आदि लेखकों की रचनाएँ हैं। विश्व की अनेक भाषाओं की क्लासिक रचनाएँ हिंदी में उपलब्ध हैं। फ्रांज काफ्का, अल्बर्ट कामू, गैब्रिएल गार्सिया मारखेज, चार्ल्स डिकेंस, टॉमस हार्डी, सार्त्र, सिमोन द बोउआर, ओरहान पामुक, चिनुआ अचेबे आदि अनेक नाम हैं।

भारतीय भाषाओं के बीच भी बहुत अनुवाद हुए हैं। विशेष रूप से साहित्य अकादमी तथा भारतीय ज्ञानपीठ ने भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद कराए और प्रकाशित किए। आज रवींद्रनाथ ठाकुर, अमृता प्रीतम, मंटो, शिवाजी सावंत, दया पवार, प्रतिभा राय, रमाकांत रथ, इंदिरा गोस्वामी, कमला दास आदि न जाने कितने नाम हैं जिनकी रचनाओं के सफल अनुवाद अलग–अलग भारतीय भाषाओं में हुए हैं। अनुवाद की मध्यस्थता से ही ये सभी लेखक केवल एक भाषा के साहित्य के प्रतिनिधि न होकर भारतीय साहित्य की अनवरत परंपरा की शोभा हैं।

इसी तरह हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण रचनाओं के अन्य भारतीय भाषाओं, अंग्रेजी तथा विश्व की भाषाओं में अनुवाद हुए हैं। प्रत्येक दृष्टि से प्रेमचंद की लोकप्रियता विश्वप्रसिद्ध है। जैनेंद्र, अज्ञेय, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, कुँवर नारायण, निर्मल वर्मा, उदय प्रकाश, कृष्ण बलदेव वैद, मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, असगर वजाहत आदि अनेकानेक रचनाकारों की महत्वपूर्ण कृतियों के अंग्रेजी अनुवाद उपलब्ध हैं।

भूमंडलीकरण के बाद की ग्लोबल दुनिया में अंग्रेजी के लोकप्रिय साहित्य को हिन्दी में पढ़ने की माँग बढ़ी है। चेतन भगत, देवदत्त पटनायक, रविंद्र सिंह, जेरी पिंटो, जैसे लेखकों की अंग्रेजी किताबों के हिंदी अनुवाद इनकी मूल अंग्रेजी पुस्तकों के ही समान लोकप्रिय होते हैं। इनके अतिरिक्त अमिताव घोष, सलमान रुश्दी, अरुंधति रॉय, झुंपा लाहिड़ी जैसे लेखक अपनी रचनाओं के हिन्दी अनुवादों के कारण ही हिन्दी–भाषी जनता के बीच भी उतने ही लोकप्रिय हैं, जितने अंग्रेजी की दुनिया में। लगभग सभी प्रमुख प्रकाशन समूह आजकल अनुवादों का प्रकाशन प्रमुखता के साथ कर रहे हैं और बाजार तथा लोकप्रियता की दृष्टि से कथा साहित्य के अनुवाद की केंद्रीय उपस्थिति बनी हुई है। दी गई तालिका में कुछ महत्वपूर्ण कृतियों के नाम व उनके अनुवाद प्रस्तुत हैं :

कथा साहित्य के अनुवाद : कुछ उदाहरण

1. कथा साहित्य के हिन्दी अनुवाद

अनूदित रचना का शीर्षक	स्रोत भाषा	लेखक	अनुवादक
मुकदमा	जर्मन	फ्रांज काफ्का	राजकुमार मोहन
एडविना और नेहरु	फ्रांसीसी	कैथरीन क्लैमाँ	निर्मला जैन
एडल्टरी	ब्राजीलियन भाषा	पाओलो कोएलो	दिनेश शर्मा
शस्त्र विदाई	अंग्रेजी	अर्नेस्ट हेमिंग्वे	अजय चौधरी
स्वीकार	रूसी	मैक्सिम गोर्की	उपमा ऋचा
युद्ध और शांति	रूसी	लियो तोल्स्तोय	वल्लभ सिद्धार्थ
इलियड	ग्रीक	होमर	रमेश चंद्र सिन्हा
फोमा गोर्देएव	रूसी	मैक्सिम गोर्की	जंग बहादुर गोयल नीलम गोयल
अपार खुशी का घराना	अंग्रेजी	अरुंधति रॉय	मंगलेश डबराल
मामूली चीजों का देवता	अंग्रेजी	अरुंधति रॉय	नीलाभ
पाकिस्तान मेल	अंग्रेजी	खुशवंत सिंह	उषा महाजन
रवोल्यूशन हाइवे	अंग्रेजी	दिलीप सिमियन	प्रदीप दीक्षित
सितारों की रातें	अंग्रेजी	शोभा डे	मोजेज माइकेल
राग पहाड़ी	अंग्रेजी	नमिता गोखले	पुष्पेश पन्त
काफ्का की लोकप्रिय कहानियाँ	जर्मन	काफ्का	अरुण चंद्र
रुडयार्ड किपलिंग की लोकप्रिय कहानियाँ	अंग्रेजी	रुडयार्ड किपलिंग	मोजेज माइकेल
गालिसिया की कथाएँ	पोलिश	अंजेय स्ताशुक	मारिया पुरी
कमरे तथा अन्य कहानियाँ	पोलिश	ओल्गा तोकार्चुक	मारिया पुरी

1. हिंदी कथा साहित्य के अंग्रेजी अनुवाद

अनूदित रचना का शीर्षक	लेखक	अनुवादक
The Girl with the Golden Parasol	Uday Prakash	Jason Grunebaum
The Walls of Delhi	Uday Prakash	Jason Grunebaum
Rage Revelry and Romance	Uday Prakash	Robert A- Hueckstedt
A Gujarat Here A Gujarat There	Krishna Sobti	Daisy Rockwell
Listen Girl	Krishna sobti	Shivanath
Zindaginama	Krishna sobti	Neer Kanwal Mani and Moyna Majumdar
The Music of Solitude	Krishna sobti	Vasudha Dalmia
Tamas	Bhishm Sahni	Translated by the Author Himself

Middle India Selected	Bhishm Sahni	Gillian Wright
Stories		
Basanti	Bhishm Sahni	Shveta Sarda
Stranger on the Roof	Rajendra Yadav	Ruth Vanita
The Great Feast	Mannu Bhandari	Ruth Vanita
Topi Shukla	Rahi Masoom Raza	Meenakshi Shivraman
A Village Divide	Rahi Masoom Raza	Gillian Wright
Raag Darbari	Shrilal Shukl	Gillian Wright
This Is Not That Dawn	Yashpal	Anand
The Last Wilderness	Nirmal Verma	Pratik Kanjilal
Partition	Kamleshwar	Ameena Kazi Ansari
Chander and Sudha	D h a r m v e e r Bharati	Poonam Saxena

2. भारतीय कथा साहित्य के अंग्रेजी अनुवाद

अनूदित रचना का शीर्षक	स्रोत भाषा	लेखक	अनुवादक
River of Fire	उर्दू	Qurratulain Haider	Qurratulain Haider
Titu Mir	बांग्ला	Mahashweta Devi	Rimi B Chatterjee
Rudali	बांग्ला	Mahashweta Devi	Anjum Katyal
Breast Stories	बांग्ला	Mahashweta Devi	Gayatri Chakravorty Spivak and Samik Bandhopadhyay
The Collected Shorts Stories	उर्दू	Saadat Hasan Manto	Aatish Taseer
Written in Tears	असमिया	Arupa Patangia Kalita	Ranjita Biswas
On a Wing and a Prayer	असमिया	Arun Sarma	Maitreyee Siddharth Chakravarty
The First Promise	बांग्ला	Ashapurna Debi	Indira Chaudhry
Those Days	बांग्ला	Sunil Gangopadhyay	Aruna Chakravarti
Cuckold	मराठी	Kiran Nagarkar	By the Author
Cobalt Blue	मराठी	Sachin Kundalkar	Jerry pinto
Samskara	कन्नड़	U-R-Ananthamurthy	A.K. Ramanujan
Ghachar Ghochar	कन्नड़	Vivek Shanbhag	Srinath Perur
Bharathipura	कन्नड़	U-R-Ananthamurthy	Susheela Punitha
Sangati	तमिल	Bama	Lakshmi Holmstrom

One Part Women	तमिल	Perumal Murugan	Aniruddhan Vasudevan
The Legends of Khasak	मलयालम	O- V- Vijayan	By translate himself

3. भारतीय कथा साहित्य के हिंदी अनुवाद

कहानी / उपन्यास	भाषा	रचनाकार	अनुवादक
गोरा	बांग्ला	रविन्द्रनाथ टैगोर	स. ही. वात्स्यायन अज्ञेय
आँख की किरकिरी	बांग्ला	रविन्द्रनाथ टैगोर	हंस कुमार तिवारी
घर और बाहर	बांग्ला	रविन्द्रनाथ टैगोर	इलाचंद्र जोशी
टेढ़ी लकीर	उर्दू	इस्मत चुगताई	शबनम रिज़वी
मुझे कुछ कहना है	उर्दू	ख्वाजा अहमद अब्बास	जोया ज़ैदी
आखिरी बूँद की खुशबू	उर्दू	जाहिदा हिना	तसनीम सुहेल
आधी औरत आधा ख्वाब	उर्दू	इस्मत चगताई	वाणी प्राकाशन
संस्कार	कन्नड़	यू. आर. अनंतमूर्ति	चंद्रकांत कुसनूर
अवस्था	कन्नड़	यू. आर. अनंतमूर्ति	भालचंद्र जयशेट्टी
खरीदी कौड़ियों के मोल	बांग्ला	बिमल मित्र	वीरेन्द्रनाथ मंडल
देवदास	बांग्ला	शरतचंद्र चट्टोपाध्याय	हंस कुमार तिवारी
हिन्दू	मराठी	भालचंद्र नेमाड़े	गोरख थोरात
घाचर घोचर (उपन्यास)	कन्नड़	विवेक शानभाग	अजय कुमार सिंह
चन्दन का फूल	उड़िया	पारमिता शतपथी	देवदत्त यदुमणि
अमृत फूल	उड़िया	मनोज दास	सुधा
बिल टेलर की डायरी	मैथिली	लिली रे	विभा रानी

7.4 कथा साहित्य के अनुवाद के सांस्कृतिक संदर्भ

कथा साहित्य में वर्णन और विवरण प्रधान होते हैं। जिस किसी देश या भाषा के साहित्य के विषय में बात हो रही है अनुवादक के लिए आवश्यक है कि वह उस पूरे सांस्कृतिक संदर्भ को समझता हो जिसमें कि वे चरित्र विकसित किए जा रहे हैं। कई बार सांस्कृतिक संदर्भों के कारण ही कहा जाता है कि वहाँ अनुवाद संभव ही नहीं है। अनुवाद की सैद्धांतिकी की भाषा में वह अननुवाद्य है। उत्तर औपनिवेशिक समय में अनुवाद के बढ़ते महत्त्व के साथ–साथ अननुवाद्य को अनुवाद्य बनाने और मानने की वैचारिक दृष्टि का विकास हुआ। अपने निबंध *'माइंड द गैप : ट्रांसलेटिंग द अनट्रांस्लेटेबल'* में मार्गरेट जुल कोस्टा ने मुहावरों से लेकर विभिन्न व्यंजनाओं को अनूदित करने की प्रक्रिया पर बल देते हुए सिद्ध किया कि अनुवाद की सफलता इस बात पर है कि आप अनुवाद करते हुए अनेक विकल्पों में से किस विकल्प को चुनते हैं। यह चुनाव केवल शाब्दिक अर्थ की समतुल्यता पर निर्भर नहीं है बल्कि सांस्कृतिक सामीप्य पर आश्रित होना चाहिए। बहुत छोटी से छोटी बात भी अत्यंत आवश्यक हो सकती है। किसी भी सूरत में अनुवादक के लिए यह अच्छा नहीं होगा कि वह ऐसा रास्ता चुने कि जब ऐसे संदर्भ आएँ वह उनका अनुवाद करने से बचने लगे या उसे छोड़ दे। किसी भी भाषा के साहित्यिक मानचित्र में

अन्य भाषा की कृति के स्वीकृत होने का आधार अनुवाद की संभावनाओं में निहित है और अनुवाद की संभावना सांस्कृतिक आशय की सही पकड़ से ही दृढ़ होती है।

अनुवाद की तमाम सैद्धांतिकी के बीच हिंदी के प्रतिष्ठित रचनाकार, कुँवर नारायण के निबंध *'अनुवादकों की ऐतिहासिक देन'* की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक है जिसके अंतर्गत उन्होंने अनुवाद के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण प्रपत्तियाँ की हैं। अपने इस लेख में वे साहित्य के समानांतर चलने वाली अनुवाद की लंबी परंपरा और उसमें भी विशेष रूप से कुमारजीव (344–413 ई.) द्वारा बौद्ध–ग्रंथों के चीनी भाषा में किए गए अनुवाद के ऐतिहासिक महत्त्व को याद करते हुए वे लिखते हैं –

dekjtho u ,d vuokn d dke dk foLrr djr g, phuh Hkk"kk e c) d fopkjk d fy, ,d fo'k"k txg cukbA ;g doy Hkk"kkrj.k ugh Fkk cfYd bl ç;Ru e mPpdkfV dh jpukekfeRrk Hkh Fkh ftlu u doy phuh Hkk"kk e u;k dN tkMk cfYd c) d fopkjk dk Hkh ,d u; n'kdky vkj Hkk"kk e çfrf"Br fd;kA ykvkRl vkj dU¶;f'k;l d cxy e] mud uhp ughA

कुँवर जी कि यह प्रपत्ति बिल्कुल सही है कि अनुवादक का काम दूसरी भाषा में उस साहित्यकार के लिए एक रचनात्मक जगह बनाने का है और वह भी इस तरह कि अनूदित रचनाकार लक्ष्य भाषा के रचनाकारों की कड़ी में उनके साथ, अपना स्थान प्राप्त करे और यह तभी संभव होगा जब अनुवादक भाषा के साथ–साथ लक्ष्य भाषा के साहित्यिक संस्कार तथा सांस्कृतिक संदर्भों को भली प्रकार समझकर संप्रेषित कर पाए। इस बात को स्पष्ट करने के लिए कुछ उदाहरण देखिए। पहला उदाहरण नाइजीरिया के उपन्यासकार चिनुआ अचेबे के उपन्यास ***Arrow of God*** से है :

The custom of Umuaro was well known and he did not require the priest of Idemili to instruct him- Every Umuaro child knows that if a man kills the python inadvertently, he must placate Idemili by arranging a funeral for the snake almost as elaborate as a man's funeral. But there was nothing in the custom of Umuaro for the man who puts the snake into a box. Ezeulu was not saying that it was not an offence, but it was not serious enough for the priest of Idemili to send him an insulting message. It was the kind of offence which a man put right between himself and his personal god. And what was more the Festival of the New Pumpkin Leaves would take place in a few days. It was he, Ezeulu, who would then cleanse the six villages of this and countless other sins, before the planting season.

(मूल अंग्रेजी उपन्यास ***Arrow of God*** से)

उमुआरो के रीति रिवाज वह बखूबी जानता था और उसे इडेमिली के पुजारी के निर्देशों की जरूरत नहीं थी। उमुआरो का हर बच्चा जानता था कि अगर कोई गलती से अजगर को मार देता है तो इडेमिली को शांत करने के लिए उसे साँप का श्राद्ध–कर्म वैसे ही करना होगा जैसे आदमियों का श्राद्ध–कर्म किया जाता है। लेकिन जो आदमी साँप को बक्से में रख दे उसके लिए उमुआरो के रिवाजों में कुछ भी नहीं है। एजेउलू का कहना यह नहीं था कि यह अपराध नहीं था, लेकिन वह इतना गंभीर भी नहीं था कि इडेमिली का पुजारी उसे एक अपमानजनक संदेश भेजे। यह उस तरह का अपराध था जिसे आदमी अपने और अपने निजी देवता के बीच से सुलटा लेता था और सबसे बड़ी बात यह कि कुछ ही दिनों में कद्दू के पत्तों का त्यौहार होने

वाला था और तब एजेउलूही इन छह गाँवों को रोपनी के मौसम से पहले ऐसे और दूसरे अपराधों से पवित्र करने वाला था।

(देवता का बाण – अनुवाद : अच्युतानंद मिश्र)

इस अंश में साँप के श्राद्ध–कर्म की बात की गई है, जो बिल्कुल एक सांस्कृतिक संदर्भ है। भारतीय संस्कृति में साँप की पूजा भले ही होती हो लेकिन साँप इतना श्रद्धेय नहीं है जिसको गलती से भी मार देने पर उसका श्राद्ध–कर्म करना पड़े। दूसरे, यदि इस उपन्यास के शीर्षक को भी देखें तो उसका शीर्षक *Arrow of God* है। God यानी ईश्वर लेकिन यहाँ सब अपने अपराध अपने निजी देवता के साथ सुलटा सकते हैं यानी यह ईश्वर भी निजी है जनसमाज का देवता। इसलिए शीर्षक का अनुवाद गॉड होने पर भी ईश्वर न रखकर 'देवता का बाण' रखा गया है। बहुत समय तक जब भी सांस्कृतिक संदर्भों को खोलना होता था तो अनुवादक फुटनोट का सहारा लेते थे लेकिन ऐसा करने से वह नोट्स अधिक और रचना कम रह जाती है। आजकल अनूदित वाक्य में ही संदर्भ स्पष्ट करने की कोशिश रहती है। जैसे मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी 'केयर ऑफ स्वातघाटी' का अनुवाद हिंदी की कवयित्री अनामिका ने किया। इस कहानी में एक साधारण–सा वाक्य है – राजा जनक के नौ रत्नों में एक रत्न 'गार्गी'। इसका अनुवाद करते हुए सांस्कृतिक संदर्भ के कारण 'नवरत्न' शब्द को स्पष्ट करना आवश्यक था। अनुवादक ने अर्थ को वाक्य में ही इस प्रकार विन्यस्त कर दिया 'Gargi, one among the Navratnas, the nine precious jewels in King Janak's Court!'

एक और उदाहरण कृष्णा सोबती के उपन्यास *'जिंदगीनामा'* से है। *'जिंदगीनामा'* अनुवाद की दृष्टि से तो कठिन है ही, उसमें जिस तरह से पंजाब की संस्कृति को पिरोया गया है उसके कारण वह हिंदी समाज के पाठक के लिए भी चुनौती बना रहा। पंजाब का परिवेश, वहाँ की बोली–बानी और उस मिट्टी के भाषिक मुहावरे को कृष्णा सोबती ने हिंदी उपन्यास में विन्यस्त किया। इस उपन्यास की भाषा पर हिंदी के कई आलोचकों ने भी आपत्ति की और यह माना कि संवादों की भाषा तो स्थानीय भाषा हो सकती है लेकिन पूरे उपन्यास की भाषा में इस तरह से दूसरी भाषा को विन्यस्त कर देने से उसकी संवाद–धर्मिता खंडित होती है। इसके विपरीत कृष्णा सोबती इस बात के लिए अटल रहीं कि उपन्यास की भाषा का सवाल भाषा के जनतंत्र का सवाल भी है। हिंदी का कोई एक निश्चित रूप नहीं हो सकता। वह जितनी भाषाओं को अपने भीतर समेट लेगी, उतनी ही समृद्ध होगी और *जिंदगीनामा ही* क्या उनके सभी उपन्यासों में पंजाबी और पंजाबियत घुले–मिले हैं जिसका उन्होंने सुंदर रचनात्मक प्रयोग किया है। ऐसी भाषा रचनात्मक साहित्य को तो एक अतिरिक्त आयाम प्रदान करती है लेकिन अनुवाद के लिए बहुत बड़ी चुनौती हो जाती है। *ज़िंदगीनामा* के अनुवाद को लेकर भी एक लंबी कहानी है, कृष्णा सोबती के सभी उपन्यासों का अनुवाद कथा संस्था द्वारा प्रकाशित हुआ है। मूलतः हिंदी में 1979 में प्रकाशित *ज़िंदगीनामा* उपन्यास का अंग्रेजी अनुवाद नीरकंवल मणि द्वारा 2004 में कथा को सौंप दिया गया। अनुवाद में अनुवादक ने बहुत सारे पंजाबी के शब्दों को अंग्रेजी अनुवाद में भी ज्यों का त्यों रखा। कथा प्रकाशन संस्थान में इस अनुवाद पर सहमति नहीं बनी। फिर अन्य अनुवादकों ने उसमें फेरबदल करने की कोशिश की लेकिन बार–बार यह रहा कि उपन्यास की आत्मा अनुवाद में नहीं संप्रेषित हो पा रही और अंततः 2016 में मोइना मजूमदार के साथ मूल अनुवाद का कुछ संपादन कर हार्पर कॉलिंस ने उसे प्रकाशित किया। यह तय कर पाना हर बार बहुत मुश्किल है कि मूल रचना का कितना प्रतिशत

आप अनुवाद में ज्यों का त्यों रखेंगे और कितना अनुवाद होगा। देखिए *ज़िंदगीनामा* उपन्यास का एक अंश और उसका अंग्रेजी अनुवाद दृष्टव्य है –

pkph egjh ekFkk Vsd dfV;k ls ijrh rks jkg esa xkekfpMks dh vku feyhA

flj ij HkÙkk j[ks lkeus ls vkrh Qrsg dks n[kk rks pkph us ykM+ ls ?kqMdk&&^^D;ksa jh fèk;k eVDduh] vc rks jkth gks u! ftl ij eu Fkk] viuk gks x;k! dSlk gS jh tokbZ gekjk \^^

Qrsgejxbl] vkqdh&ckqdh gks gLl&gLl tk,A

^^vjh] tjk <sx ls fudyk djA f[ky&f[ky eVdrh jgsxh rks fiaM vkq[kks ls [kk tk,xkA ru ij dgha dkyh fFkxyh [kks l MkyA^^

Qrsg us niêh esa gkFk Mky ijkank Nkrh ij ygjk fy;k&&^^vc rks Bhd gS u pkph!^^

lqu dqM+s rs gh vuks[kh bl lokjh ij ugha p<+hA tjk lHky dsA fnu&jkr vkx tyk, jgsxh rks <y tk,xh tYnh!^^ ¼*ftanxhukek* & —".k lkscrh½

^**Chachi Mehri was returning from the prayer hut when she was joined by Goma, of the clan of Chiras. Seeing Fateh coming their way with food balanced on her head, Chachi mock scolded her: Kyonri, darling daughter, are you happy now? The one you set your heart on is all yours! How is he? our dear son-in-law?**^

Fateh swung coyly this way and that, the laughter burbling out of her-

^**Ari, be modest now. Contain yourself. If you spill all over with your swinging ways, the village will devour you with its eyes! Keep something black tucked on you to ward off the evil eye-** ^

Fateh pulled out her long tassled plait from beneath her dupatta and swung it upon her breasts, 'Is that better, Chachi ^

^**Listen girl, you're not the only one to ride this horse of youth. Take care, if you keep the flame burning high night and day, you will burn out fast.*** ¼**Zindaginama** &vuqokn % uhj dqoy ef.k rFkk ek;uk e tqenkj½

इस अनुवाद में अंग्रेजी की अंग्रेजीयत की बजाय अंग्रेजी के भीतर से एक हिंदुस्तानी और पंजाबी परिवेश झाँकता है। इसमें एक कठिनाई और भी है कि यदि आप उस मूल को लक्ष्य भाषा के समाज की संस्कृति के हिसाब से बदलते जाएंगे तो वह एक तरह का सांस्कृतिक रूपांतरण भी होगा जिसे cultural appropriation कहा जाता है. ऐसा करते हुए न केवल उसे अंग्रेजी भाषा की प्रकृति के अधिक अनुकूल बनाया जाता है बल्कि कभी–कभी संज्ञाओं का भी अनुवाद कर दिया जाता है यानी पात्रों के नाम नए होंगे और जगहों के भी। उत्तर–औपनिवेशिक दौर से पहले के अधिकांश अनुवादों में यह सांस्कृतिक अंतरण बहुत होता था लेकिन अनुवाद की उत्तर–औपनिवेशिक सैद्धांतिकी ने इस बात पर बल दिया कि इस तरह का सांस्कृतिक अनुकूलन नहीं होना चाहिए और अनुवाद के माध्यम से उस सांस्कृतिक परिवेश को पाठक पहचान सके, यह जरूरी है।

भारत जैसे बहुलतावादी देश में दो भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद विशेष महत्व रखता है क्योंकि यहाँ की विभिन्न भाषाएँ साझे यथार्थ की साक्षी हैं। उनके बीच सेतु का कार्य अनुवाद द्वारा ही संभव है। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तो लगभग एक सी है, अनुभव का रूप भी समान है, अंतर केवल क्षेत्रीय अनुभवों का है। ऐसे में अनुवाद अंतर की अपेक्षा समानताओं को चिह्नित करने का उपक्रम है। भारतीय परिवेश और समाज की भागीदारी इन रचनाओं में इस तरह उपस्थित है कि भारतीय अनुवादक को उसके सांस्कृतिक अनुकूलन की आवश्यकता नहीं रह जाती हालांकि वैश्विक अनुवादों में विवरण की अधिक गुंजाइश होती है।

भारतीय मूल के लेखकों द्वारा अंग्रेजी में किया गया लेखन भारतीय सांस्कृतिक परिवेश को अभिव्यक्त करता है जैसे अमिताव घोष, झुंपा लाहिड़ी आदि रचनाकारों की रचनाएँ लेकिन यहाँ इस तथ्य को भी रेखांकित करना होगा कि अंग्रेजी भाषा वहाँ विदेशी या 'अन्य' भाषा नहीं रह जाती। वह भारतीय संवेदना, अनुभव एवं भाषा की साक्षी प्रस्तुत करती है और उसके साथ–साथ मानवीय गरिमा के उस व्यापक परिदृश्य को भी विकसित करती है जहाँ देश और भाषा की सीमाएँ निरस्त हो जाती हैं।

7.5 कथा साहित्य के अनुवाद की चुनौतियाँ एवं समस्याएँ

7.5.1 पूरी कथा को समेटना

कथा साहित्य के अनुवाद में जिन बातों की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए, उनमें निश्चित रूप से सबसे पहली तो यही है की अनुवादक को वह कहानी पूरी तरह समझ आनी चाहिए और उसके अनुवाद में पूरी कथा बयान होनी चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि अनुवादक उस पूरी पृष्ठभूमि को, पात्रों को और भाषा को समझे। उतना ही जरूरी है कि विधा के रूप में उपन्यास का जो रूप है, बलाघात है, लेखक का उद्देश्य और पाठ की अर्थ छवियाँ हैं, इन सबका भी अनुवादक को पूरा अंदाज होना चाहिए और इन को उचित रूप में अनूदित करने का प्रयास होना चाहिए। कोई भी रचनात्मक साहित्यकार केवल भाषा का प्रयोग ही नहीं करता, वह भाषा से भी प्रयोग करता है जिससे उसी भाषा का इस्तेमाल कर वह कुछ नए अर्थ भर देता है या कहें कि भाषिक चमत्कार उत्पन्न कर देता है। एक उद्धरण दृष्टव्य है –

'But electric trains are using power: yellow-and-brown local trains clatter south towards Churchgate station from Dadar and Borivli, from Kurla and Bassein Road. Hman flies hang in thick white trousered clusters from the trains' ¼Midnight's Children : Salman Rushdie½

^exj fctyh dh j;y fctyh dk bLreky dj jgh gS % nknj vkSj ckjhoyh ls dyk vkSj cslbu jksM ls ihyh&Hkwjh ykdy Vsu nf{k.k esa ppZxsV LVs'ku dh rjQ NdNd djrh tkrh gSA eksVs mtys iryuksa dk >qM cukrs efD[k;ksa ls ykx Vsuksa ls yVds jgrs gSA* ¼*vk/kh jkr dh larku&vuqokn % fç;n'kZu*½

अब यहाँ प्रियदर्शन ने *clatter towards* के लिए छुकछुक करती जाती हैं लक्ष्य भाषा के अधिक अनुकूल है। अनुवादक को कोशिश करनी होती है कि अपने अनुवाद में वह रूप और शिल्प संबंधी इन सारी छोटी–बड़ी विशेषताओं को रूपांतरित करने की कोशिश करे। अनुवाद कथा का भी होता है और कथा के साथ–साथ विधा के सौंदर्य

और शिल्प के अनुवाद की भी गुंजाइश बननी चाहिए। अनुवादक को लेखक की पक्षधरता और प्रतिबद्धता का भी पूरा ज्ञान होना चाहिए जिससे वह उसके दृष्टि–बोध को प्रस्तुत कर सके।

उत्तर–आधुनिक समय में लेखक कई तरह की नैरेटिव टेकनीक्स अर्थात कथा–रूपों का इस्तेमाल करते हैं यानी अब कथा साहित्य केवल कथा कहने भर का माध्यम नहीं है। कथा का विकास भी सीधी रेखा के ढंग से नहीं किया जाता बल्कि उसमें बहुत से तत्व वर्तुल आकार होकर शामिल हो जाते हैं। इतिहास, परंपरा मिथक, सामाजिक–राजनीतिक बहसें, मीडिया का आभासी यथार्थ – ये सभी कथा तत्व का अंग हो सकते हैं। उस कहानी को समझना ही अपने आप में चुनौती हो सकती है। उस कहानी या कथा का लक्ष्य किसी एक जीवन सत्य को उद्घाटित करना न होकर जीवन को उसकी जटिलताओं में प्रस्तुत करना हो सकता है और उन जटिल संरचनाओं की अभिव्यक्ति के लिए लेखक तरह–तरह की संरचना को अपनाते हैं। ऐसा कथा साहित्य पाठक से एक विशेष तैयारी की उम्मीद करता है जिसमें पाठक रचना के अर्थ का निर्माता स्वयं हो सकता है। यह तभी संभव है जब पाठक उन तमाम कथा संदर्भों को डिकोड करके अर्थ के नए–नए स्तर उद्घाटित कर सके। अनुवादक को ऐसी रचना में सबसे पहले पाठक की तरह प्रवेश करना होता है और फिर दूसरी भाषा में इस चमत्कार को पुनःसृजित करना पड़ता है जिसमें अर्थ भी प्रेषित हो जाए और कथा संरचना की वह बुनावट भी बनी रह सके। जैसे उदय प्रकाश की कहानी *'वॉरेन हेस्टिंगस का साँड़'* में :

vki vxj ml vKkr fp=dkj }kjk cuk, x, ^I;kjyh g,y* cxyk d bl fp= dk nj rd n[k rk vkid 'kjhj d Hkhrj Hk; vkj mRl|drk dh ,d vthc lh lj|lj|h ink gku yxxhA

vkidh vk[k fp= d ck, fupy dku l ,d iy dk Hkh ugh gVxhA o ogh tM gk tk,xh] tgk ykg dh ekVh tthjk] lk|dyk vkj dkB dh etcr ckMcnh d Hkhrj ,d jgL;e;] mUur vkj Økèk e fcQjrk g|vk lkM dn gA

blh lkM dk n[kdj fcVu dk og 'kkunkj 'kkgh dkyk ?kkMk Mjdj vM x;k gA d|Ùkk mNyrk g|vk yfdu Mjk g|vk Hkkd jgk gA

vkj fp= d nkfgu çe d fupy dku l ckã.kh xk; vkj cy cgr vk'kk] ;kpuk vkj d#.kk Hkjh vk[kk l ml lkM dk fugkj jg gA

bl lkM dk o,ju gfLVXl d fy, le|,y Vuj u rc Hkstk Fkk tc og frCcr dh ;k=k ij x;k FkkA

(वॉरेन हेस्टिंगस का साँड़ – उदय प्रकाश)

If you keep looking at this anonymous painting of Purely Hall, a shiver will rise in your body, a strange tremor of fear and curiosity-

They will be fixed on that mysterious, aroused and uncontrollably angry bull imprisoned by thick iron shackles and chains inside the strong wooden pen. …. And the brahminy ox and cow in the lower right hand corner gaze at that bull with extremely hopeful, petitioning and compassionate eyes. This bull Warren Hastings received from Samuel

Turner who returned from a trip to Tibet- (*Warren Hastings and His Bull* *अनुवाद* : रॉबर्ट हयूसटेड)

7.5.2 पात्रों का चरित्र–चित्रण

कथा साहित्य में कथा या कहानी पात्रों पर आधारित है। कथा के पात्र तथा उनके संवाद ही उसे सजीव बनाते हैं। एक ही रचना के पात्र भिन्न पृष्ठभूमि के, अलग–अलग हो सकते हैं। कथाकार पात्रों की भावनाओं और अभिव्यक्ति पर विशेष ध्यान देता है। उनकी भाषा से लेकर उनके हाव–भाव सब एक दूसरे से अलग होते हैं कोई भी पात्र अपनी सामाजिक स्थितियों का प्रवक्ता होता है। पात्रों की यह विविधता उनके सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेष, उनकी देह–यष्टि, उनकी भाषा, शैली आदि विभिन्न स्तरों पर होती है। अनुवादक के लिए भी यह समस्या है कि वह भिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि के पात्रों को ठीक से समझे और उसे दूसरी भाषा में उतारने का प्रयत्न करे।

7.5.3 भाषा

जहाँ तक भाषा का सवाल है वह भी विविधतापूर्ण एवं बहुस्तरीय होती है। प्रत्येक भाषा का अपना एक भाषिक कोड है जो भाषा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से रूप ग्रहण करता है। कथा साहित्य में, विशेष रूप से उपन्यास में एक ही उपन्यास में अनेक भाषाओं का कोड मिल सकता है। अगर अनुवादक भाषा के इस ढाँचे की विविधता पर उसके सांस्कृतिक इतिहास पर ध्यान नहीं देता तो बहुत संभव है कि वह बारीक अर्थ छवियों को खो दे और उस भाषा के माध्यम से जो लेखक जिस संस्कृति को अभिव्यक्त करना चाहता है, वह विलुप्त हो जाए। भाषा का मसला केवल शब्दों के सीधे अर्थ–निरूपण से हल नहीं होता। बहुत बार ऐसा संभव है कि स्रोत भाषा के कुछ शब्दों को लक्ष्य भाषा में उसी तरह रहने दिया जाए और जैसे कि एक पाठक स्रोत भाषा में भी उन शब्दों के अर्थ ग्रहण करने के लिए कुछ मेहनत करता है वैसे ही अनुवाद का पाठक भी उन शब्दों के मूल अर्थों को खोजने की कोशिश करे। बहुत बार रचना में शब्दों की खास ध्वनियाँ इस्तेमाल होती हैं। वे ध्वनियाँ लक्ष्य भाषा में कैसे रूपांतरित हों? रेणु के साहित्य में भाषा के साथ–साथ ऐसी संगीतात्मक ध्वनियों का बहुत महत्व है। रेणु की कहानी *'तीसरी कसम'* का अनुवाद करते हुए अनामिका ने इन ध्वनियों को अंग्रेजी पाठ का भी हिस्सा बनाया। हीरामन का बात–बात में इस्स कहना या महुआ घटवारिन की कथा की संगीतात्मक ध्वनियाँ, ढोल की आवाज, बैलों से संवाद आदि अनेक टुकड़े हैं जो अपनी ध्वन्यात्मकता में उस अंचल विशेष का पता तो देते ही हैं, पात्रों की भावनाओं को अभिव्यक्त करने में भी सक्षम हैं। अनामिका स्वयं संवेदनशील कवयित्री हैं उन्होंने पूरी कहानी में ऐसी ध्वनियों को अनुवाद में भी सहेज कर प्रस्तुत किया है जो स्थानीय परिवेष की शैली का प्रतिनिधित्व करता है –

'Kirr-rr-rr-r," rolled the drum- "Kar-d-d-d-d-rr-rr-dhan-dhan-dhan-dharaama!'

अनुवादक के अनुवाद की सामर्थ्य इसी बात में है कि वह भाषा की इन अर्थ छवियों को किस गहराई से महसूस करके उनका रूपांतरण कर पाता है। केवल व्याकरण के सिद्धांत जानने से यह संभव नहीं होगा इसके लिए अनुवादक का रचना से भावनात्मक जुड़ाव होना जरूरी है। अनुवाद की प्रक्रिया दो भाषाओं, दो भिन्न संस्कृतियों, दो समाजों, दो देशों के बीच संस्कृति, रीति–रिवाज और भावात्मक एकता के स्तर पर संबंध बनाने का काम करती है।

अनुवाद का शाश्वत द्वंद्व 'Fidelity and Freedom' का है अर्थात मूल के प्रति पूर्ण निष्ठा या परिवर्तन की स्वतंत्रता। यह अनुवाद का ऐसा मसला है जो शताब्दियों से बहस के केंद्र में रहा है। मीनाक्षी मुखर्जी, *'ए हैंडबुक ऑफ ट्रांसलेशन स्टडीज' की भूमिका में स्वीकार करती है कि 'अनुवादक को मूल के प्रति अपनी निष्ठा और उससे पूर्ण स्वतंत्रता के बीच संतुलन स्थापित करना होता है।'* इस पूरी बहस में 'स्वतंत्रता' का तर्क है कि मूल पाठ के अनुगमन की निष्ठा साहित्यिक सौंदर्य को बाधित कर सकती है। इसलिए अनुवादक का धर्म, मूल भाव या कथ्य के प्रति निष्ठावान होना है शब्दों के प्रति नहीं। अनुवाद का प्रतिमान 'dynamic equivalence' है जो अर्थ संप्रेषण की प्रक्रिया के स्थिर या जड़ नहीं है। इसका अभिप्राय है कि अनुवाद के लिए समतुल्य शब्द, पद या पदबंध चुनना होता है लेकिन चुनने की यह प्रक्रिया स्थिर या निश्चित नहीं है। अलग–अलग संदर्भ और परिप्रेक्ष्य में समतुल्यता अलग तरह की हो सकती है। मूल उद्देश्य लेखक के सही मंतव्य को सटीक ढंग से अभिव्यक्त करने का है। कुँवर नारायण की कहानी *'वह'* के अनुवाद से एक उदाहरण –

'वह अक्सर दिखाई दे जाती है, और उसे इस तरह देखना मुझे अच्छा लगता है क्योंकि इस तरह एक संबंध बनता है जिसके टूटने में व्यथा नहीं। आत्मीयता और शारीरिकता दोनों से भिन्न वह एक पहचान है सुंदरता की...और मैं एक विशेष दृष्टि जो उस सौंदर्य को अद्वितीय बनाता है। अब तक उसे पहचानता हूँ, कलाकार की तीव्र अनुभूतियों में जीता हूँ... मंत्रमुग्ध। विमुख : उसका लोप स्वप्न की असारता है।

वह कौन है?' (कुँवर नारायण : वह)

'I often happen to see her. And it pleases me to see her this way, because this is how we form a relation that won't cause anyone pain if it breaks. Distinct from both body and soul, she is a realisation of beauty… and I am a special point of view which makes that beauty unique. For as long as I recognise her. I live in the impassioned awareness of the artist… spellbound. When I avert my face, her disappearance becomes the emptiness of a dream.

Who is she?' ¼**She** & vuqokn % t,uhokVj rFkk vi.o ukjk;.k½

यह अनुवाद जितना सरल दिखता है उतना है नहीं क्योंकि पूरा कथानक लौकिक धरातल के अतिरिक्त अधिभौतिक स्तर पर भी घटित हो रहा है। हिंदी में कहानी का शीर्षक है 'वह'। वह कहने से पुल्लिंग या स्त्रीलिंग का पता नहीं चलता लेकिन जब अंग्रेजी में कहानी घटित की जाती है तब उस 'वह' को She कहकर निश्चित करना पड़ता है। वह व्यक्ति भी है, सौंदर्य–बोध भी और भावना भी। स्त्रीलिंग चुनने से इन तीनों को उसमें समेटा जा सकता है। इसलिए She का चुनाव सही dynamic equivalent अर्थात परिप्रेक्ष्यात्मक पर्याय बनता है। सामान्यतः जिन भाषाओं में लिंग की व्यवस्था ऐसी नहीं होती कि उससे क्रिया रूप बदले, उन भाषाओं के बीच अनुवाद करने में दिक्कत होती है जैसे हिंदी से बांग्ला। अनुवाद करते हुए ऐसे प्रयोगों के लिए अनुवादक को विशेष रूप से सावधान होना होगा।

कई बार कथा साहित्य में स्थानीय भाषा का भी प्रयोग होता है विशेष रूप से संवादों आदि में पात्र जिस पृष्ठभूमि का है भाषा का तेवर उसी तरह का रहता है तो अनुवादक को परिनिष्ठित भाषा के साथ–साथ स्थानीय भाषा की भी जानकारी होनी चाहिए। कथा साहित्य में भाषा ही वह संपक्र सूत्र है जो पात्रों और परिवेश को

एक–दूसरे से जोड़े रखती है। संवादों का अनुवाद करते हुए अनुवादक को उस पूरी परिस्थिति व मनःस्थितिको भी आत्मसात करना होगा जिसके बीच पात्र संवाद कहता है। विराम चिह्न का प्रयोग भी टोन को पकड़ने में कारगर होता है। एक विराम चिह्न गलत हो जाने से विशेष रूप से अर्धविराम का स्थान गलत हो जाए तो उससे अर्थ में अंतर आ सकता है। कभी–कभी अनुवाद में कुछ और तरह की समस्याएँ भी खड़ी हो जाती हैं जैसे अनुवाद में मुहावरों के रूपांतरण का संकट भी अत्यंत विकट है।

7.5 कथा साहित्य के अनुवाद की रणनीतियाँ

अनुवाद की प्रक्रिया के अनेक चरण हैं। जैसे पहले अनुवाद करना, फिर उसे सुधारना। रचना के भीतर विन्यस्त सांस्कृतिक संदर्भ से जुड़े हल्के और गंभीर मसलों पर अनुसंधान करना ताकि अनुवाद करते हुए उनके सही अर्थ–संदर्भ प्रस्तुत हों। पूरे अनुवाद का संपादन, परिष्कार। किसी भी अनुवादक को बार–बार लिखने, काटने, सुधारने से परहेज नहीं होना चाहिए। खुद की गलतियों को सुधारना अनुवाद प्रक्रिया का अनिवार्य अंग है। इन दिनों मशीनी अनुवाद की सुविधा उपलब्ध है। शब्द के अर्थ सुझाने के लिए अनुवाद के सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं। बहुत से अनुवादक आसान रास्ता समझकर इनका प्रयोग करते हैं लेकिन उसमें एक दुविधा रहती है। हो सकता है शब्दार्थ देने में वह सॉफ्टवेयर सक्षम हो लेकिन वाक्य विन्यास को तो स्वयं ही दुरुस्त करना होगा। दूसरे एक ही शब्द के कई पर्याय होते हैं। भाषा और साहित्य की जानकारी वाला व्यक्ति ही बता सकता है कि कहाँ कौन–सा प्रयोग उचित रहेगा। अनुवाद के सॉफ्टवेयर सुविधाजनक तो हैं लेकिन असंगत भी हो सकते हैं।

अनुवाद के सिद्धांतकारों ने अनुवाद के लिए कई रणनीतियाँ सुझाई हैं। अनुवाद विज्ञान में Method और Procedure को लेकर काफी विस्तार से चर्चाएँ हुई हैं। डमजीवक यानी पद्धति या तरीका और Procedure यानी प्रक्रिया। अनुवाद की प्रक्रिया प्रारंभ करने से पहले आपको तय करना होगा कि अनुवाद में किस पद्धति का प्रयोग होगा। अनुवाद मात्र शब्दानुवाद भी हो सकता है और मात्र भावानुवाद भी लेकिन ये दोनों ही एकांगी रहेंगे। इस संदर्भ में अज्ञेय द्वारा जैनेंद्र के उपन्यास *'त्यागपत्र'* के अनुवाद की कहानी विलक्षण है। डॉ रणवीर रांग्रा ने अज्ञेय द्वारा *'द रेजिग्नेशन'* शीर्षक से *'त्यागपत्र'* के अंग्रेजी अनुवाद का विस्तार से विश्लेषण किया है। उन्होंने उदाहरण देकर सिद्ध किया कि किस तरह अज्ञेय ने इस अनुवाद में तरह–तरह की छूट ली और भूमिका में यह लिख दिया कि उसमें जो भी परिवर्तन किए गए हैं वह लेखक की सहमति से किए गए हैं। भूमिका में अनुवादक की स्वीकारोक्ति इन शब्दों में उल्लिखित है :

The translation here offered has been made with a view to preserving the spirit of the original; and is published with the approval of the author, who has made a few verbal alterations-

एक तरह से अज्ञेय द्वारा किया गया अनुवाद उस उपन्यास का भावानुवाद है। यूँ भी क्योंकि अनुवादक के स्वयं लेखक होने के कारण अज्ञेय ने अनेक स्थलों पर उस पूरे अनुभव को अपनी तरह संप्रेषित किया। इसका एक उदाहरण नीचे दिया जा रहा है, जिसे डॉ रांग्रा के निबंध से ही उद्धृत किया जा रहा है। मूल उपन्यास *'त्यागपत्र'* का अंश है :

^;gk [kjk dpu gh fVd ldrk g D;kfd mls t:jr gh ugh fd og dg fd e ihry ugh gA ;gk dpu dh ekx ugh g] ihry ls ?kcjkgV ugh gA bl ls Hkhrj ihry jgdj Åij dpu nh[ku okyk ykHk ;gk {k.k Hkj ugh fVdrk gA cfYd ;gk ihry dk eY; gA blfy, lku ds èk;l dh ;gk ijh{kk gA lPps dpu dh iDdh ij[k ;gh gkxhA ;g ;gk dh dlkVh gA e ekurh g fd tk bl dlkVh ij [kjk gk ldrk g] ogh [kjk gA vkj ogh çHkq dk I;kjk gk ldrk gA* (*त्यागपत्र* : जैनेंद्र)

अब देखिए इस अंश का अज्ञेय द्वारा किया गया अनुवादः

'Only the real living can survive here -- conventional morality withers beneath the burning contempt of those people- Civilization& culture-decency: these polite myths loose all meaning- The beast rules untamed and unashamed and calls to the beast that is in everyman. It does not matter how deeply hidden the latter maybe you have buried him beneath mounds of inhibition and convention to hibernate. Rampant and alert he will come forth. Only if you are human through and through can you hope to survive the ordeal-- and such as come through the are the chosen of the Lord.' (*The Resignation* – अनुवाद अज्ञेय)

शब्दानुवाद या भावानुवाद दोनों ही एकांगी हैं और अनुवाद की कुशल रणनीति के उदाहरण नहीं हैं। इनसे बचने की कोशिश करनी चाहिए। कथा साहित्य का अनुवाद तभी सफल होगा जब वह मूल भाव को प्रस्तुत करने के साथ–साथ उसकी रूप संरचना, वाक्य विन्यास सभी को संप्रेषित कर पाए।

अनुवाद में एक बड़ी समस्या लिंग, वचन या व्यंजना को लेकर होती है। उन समस्याओं को ध्यान से सुलझाना आवश्यक है। सामान्यतः हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद करते हुए यह दिक्कत ज़्यादा आती है। हिन्दी में संबंधों के लिए प्रयुक्त संज्ञाएँ संबंध–सूत्र का पता देती हैं जैसे नाना–दादा, मौसी–चाची–मामी आदि लेकिन अंग्रेजी में ऐसा विधान नहीं है। कथा साहित्य में संबंध कई तरह आयेंगे, अनुवाद में इनकी प्रस्तुति को सावधानी से संप्रेषित करना होगा।

अनुवाद में संप्रेषण और संवाद की संभावनाएँ अधिक से अधिक हों इसके लिए अनुवादक को लगातार प्रयत्न करना होता है और कई तरह के परिवर्तन भी करने पड़ते हैं। शीर्षक का अनुवाद करना भी एक बड़ी चुनौती है। शीर्षक के अनुवाद को लेकर कई बार इस तरह के परिवर्तन करने पड़ते हैं। मृदुला गर्ग की कहानी है 'हरी बिंदी'। हिंदी में यह शब्द भले ही अपने आप में व्यंजक है क्योंकि लाल बिंदी की जगह हरा रंग ही बहुत कुछ कहता है। जब इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया तब मृदुला जी ने स्वयं इसका शीर्षक बदलकर *'ए डेट विद माइ सेल्फ'* कर दिया क्योंकि अनुवाद के तौर पर वह शीर्षक अधिक व्यंजक था। इसमें एक बात और भी है, 'बिंदी' शब्द का अनुवाद कैसे हो? इस शब्द का एक विशेष सांस्कृतिक संदर्भ है लेकिन यह भी सही है कि यह इतना प्रचलित है कि जो भी हिंदुस्तान के बारे में कुछ भी जानता है उसके लिए इसका अर्थ जानना कठिन नहीं। अगर इसका अनुवाद होता तो बिंदी, दुपट्टा जैसे शब्द ज्यों के त्यों ग्रहण कर लिए जाते। यह और बात है कि यहाँ लेखिका ने स्वयं इस शीर्षक को बदल दिया। किसी भी अनुवाद में स्रोत भाषा के कुछ शब्द रख लेना या फिर अनुवाद में आशय स्पष्ट करने के लिए कुछ शब्द जोड़ देना, अनुवाद की प्रचलित रणनीतियाँ हैं। कभी–कभी ऐसा भी होता है

कि जहाँ ऐसी कोई रणनीति कारगर नहीं होती तो अनुवादक उस हिस्से को छोड़ देता है। वह यह तक्र भी दे सकता है कि उस अंश के होने न होने से मूल कथा में कोई अंतर नहीं आता। बहुत बार जब स्रोत भाषा की रचना अत्यंत विस्तृत होती है तब भी प्रविधि या नीति के स्तर पर यह कोशिश की जाती है कि अनुवाद करते हुए उसे संक्षिप्त कर दिया जाए। इस संक्षिप्तीकरण में भाव स्पष्ट करना तो संभव है लेकिन वर्णन–विवरण में, भाषा को बरतने के तरीके से शैली में जो विविधता आ रही है, वह सब लुप्त हो जाती है।

7.6 कथा साहित्य के अनुवाद संबंधी कुछ सुझाव

अनुवाद करते हुए हमें खुला–खुला लिखना चाहिए यानी एक पंक्ति का स्पेस छोड़कर जिससे बाद में वहीं सुधार करने की गुंजाइश रहे। कभी–कभी अनुवाद करते हुए कुछ अटकाव हो जाता है। किसी शब्द या पदबंध का उचित प्रतिरूप ठीक–ठीक समझ नहीं आता। ऐसी स्थिति में कुछ देर के लिए उसे वैसे ही छोड़ देना चाहिए और फिर दोबारा नए सिरे से उसे ठीक करने की कोशिश करनी चाहिए।

कोई भी साहित्यिक रचना सौंदर्यशास्त्रीय अनुभव है। विशेष रूप से कथा साहित्य के संदर्भ में लेखक अपने यथार्थ को कल्पना और संवेदना के माध्यम से सौंदर्यशास्त्रीय अनुभव में बदलता है। ऐसे में अनुवादक के सामने भी यह चुनौती है कि वह दूसरी भाषा में उस अनुभव को पुनःसृजित करे। बहुत बार ऐसा भी संभव है कि कथा जिस भाषिक परिवेश की है और उसी भाषा में उसका अनुवाद किया जा रहा है तो अनूदित रचना मूल रचना की अपेक्षा अधिक जीवंत हो उठे। जैसे अंग्रेजी की वे कृतियाँ जो भारतीय परिवेश की हैं उनका अनुवाद जब उस भारतीय भाषा में होता है, जिससे उसकी कथा का संबंध है तब सौंदर्यशास्त्रीय अनुभव के स्तर पर वह लक्ष्य भाषा के अधिक निकट हो सकती है। साझी विरासत की साक्षी के रूप में भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद सांस्कृतिक एकता का वाहक है। इन अनुभवों के माध्यम से ही रवींद्रनाथ ठाकुर, विजयदान देथा आदि तमाम रचनाकार केवल किसी एक भाषा के नहीं बल्कि साझी सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं।

इसी तरह शेक्सपियर, ब्रेख्त, दोस्तोवस्की जैसे रचनाकार विश्व साहित्य के प्रतीक पुरुष हैं। इनकी रचनाओं को किसी भी भाषा में प्रस्तुत करने के लिए केवल शब्द के सही अर्थ या वाक्यांश तलाश लेने से काम नहीं चलेगा। जैसे इन रचनाकारों ने मानवीय भावनाओं को अपने समय के विराट कैनवस पर बुना है, उसे ही अनुवाद में साकार करना होगा। हर बार इसके लिए अनुवादक को नई पद्धतियाँ, नई नीतियाँ अपनानी होंगी लेकिन कसौटी एक ही रहेगी जो रचनाकार के सामने भी रहती है कि कैसे वह संवेदना और भाषा के माध्यम से जीवन के यथार्थ को सौंदर्यशास्त्रीय अनुभव में बदले। वही काम अनुवादक का भी है। अनुवादक के पास सूक्ष्म दृष्टि होनी चाहिए और ग्रहणशील मन भी जो अलग–अलग बिंदुओं पर एक से अधिक पद्धतियों का इस्तेमाल कर लगभग मूल रचनाकार के ही समान उस कृति को प्रस्तुत कर सके। कथा साहित्य के अनुवादक के लिए यह बहुत बड़ा दायित्व है। विश्व भर में अनुवादकों ने स्वयं नेपथ्य में रहकर भी पुनःसृजन की इस चुनौती को स्वीकार किया है।

7.7 सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने जाना कि कथा साहित्य से क्या तात्पर्य है व कथा साहित्य के अंतर्गत कौन–कौन सी प्रमुख विधाएँ आती हैं। कथा साहित्य का अनुवाद अपने आप में एक जटिल कार्य है क्योंकि यहां अनुवादक से अपेक्षा केवल दो भाषाओं का ज्ञान नहीं है अपितु दो भाषाओं के ज्ञान के साथ–साथ दो संस्कृतियों की गहरी समझ होना भी अनिवार्य है और इसके साथ ही, अनुवादक को साहित्य विशेष के प्रति सहृदय होना भी उतना ही आवश्यक है। कथा साहित्य के अनुवाद की सबसे बड़ी चुनौती उसकी संस्कृतिनिष्ठ भाषा है। कोई भी कथा अपने समाज में गहरे से धंसी होती है। उस समाज के अनुभव विशेष को एक अनजानी भाषा में पुनःस्थापित करना एक बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य है। भाषा में प्रयुक्त परिवेशगत शब्द, अनुभूतियां, लोकोक्तियाँ और मुहावरे तथा समाज विशेष के भीतर से उपजी कथा – ये सभी एक अनुवादक के समक्ष चुनौती की तरह होते हैं जिनसे जूझते हुए अनुवादक को अनुवाद करना होता है। अनुवाद की इस प्रक्रिया में अनुवादक की यह ज़िम्मेदारी होती है कि वे लक्ष्यभाषा में उस समाज की अनुभूतियों व अभिव्यक्तियों को पुनःसृजित करे। इसीलिए सर्जनात्मक साहित्य का काम पाठ के पुनःसृजन के समान होता है।

प्रस्तुत इकाई में आपने कथा साहित्य के अनुवाद से संबंधित इन सभी आयामों का गहन अध्ययन किया व जाना कि कथा साहित्य के अनुवाद में कौन–कौन सी रणनीतियां कारगर होंगीं।

7.8 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. कथा साहित्य के अनुवाद की प्रकृति का वर्णन कीजिए।
2. भारतीय कथा साहित्य की प्रमुख रचनाओं एवं उनके अनुवादों की चर्चा कीजिए।
3. कथा साहित्य के अनुवाद के लिए किन–किन बातों का ध्यान रखे जाने की आवश्यकता है?
4. 'कथा साहित्य का अनुवाद एक जटिल कार्य है।' टिप्पणी कीजिए।
5. कथा साहित्य अपने समाज व परिवेश से उत्पन्न होता है इसलिए उसकी भाषा का अनुवाद बेहद चुनौतीपूर्ण है।' इस कथन की व्याख्या कीजिए।
6. कथा साहित्य के अनुवाद की विभिन्न रणनीतियों की चर्चा कीजिए।
7. किसी एक रचना की चर्चा करते हुए उसके अनुवाद संबंधी समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
8. किसी कहानी का अनुवाद करने का प्रयास कीजिए व उससे जुड़ी समस्याओं पर एक टिप्पणी लिखिए।
9. 'कथा साहित्य का अनुवाद वस्तुतः पुनःसृजन है।' इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
10. विश्व साहित्य की कुछ प्रमुख कथा रचनाओं एवं उनके अनुवादों की चर्चा कीजिए।

कथा साहित्य के अनुवाद का अभ्यास

1. हिंदी से अंग्रेजी

सुबह पाँच बजे गाड़ी मिली। उसने एक कंपार्टमेंट में अपना बिस्तर लगा दिया। समय पर गाड़ी ने झाँसी छोड़ा और छह बजते–बजते डिब्बे में सुबह की रोशनी और ठंडक भरने लगी। हवा ने उसे कुछ गुदगुदाया। बाहर के दृश्य साफ हो रहे थे, जैसे कोई चित्रित कलाकृति पर से धीरे–धीरे ड्रेसिंग पेपर हटाता जा रहा हो। उसे यह सब बहुत भला–सा लगा। उसने अपनी चादर टाँगों पर डाल ली। पैर सिकोड़कर बैठा ही था कि आवाज सुनाई दी, ''पढ़ो पटे सित्तारम सित्तारम. . . ''

उसने मुड़कर देखा, तो प्रवचनकर्ता की पीठ दिखाई दी। कोई खास जाड़ा तो नहीं था, पर तोते के मालिक, रूई का कोट, जिस पर बर्फीनुमा सिलाई पड़ी थी और एक पतली मोहरी का पाजामा पहने नजर आए। सिर पर टोपा भी था और सीट के सहारे एक मोटा–सा सोंटा भी टिका था। पर न तो उनकी शक्ल ही दिखाई दे रही थी और न तोता। फिर वही आवाज गूँज उठी, ''पढ़ो पटे सित्तारम सित्तारम. . .'' (कस्बे का आदमी – कमलेश्वर)

2. अंग्रेजी से हिंदी

Punctually at midday he opened his bag and spread out his professional equipment, which consisted of a dozen cowrie shells, a square piece of cloth with obscure mystic charts on it, a notebook and a bundle of palmyra writing. His forehead was resplendent with sacred ash and vermilion, and his eyes sparkled with a sharp abnormal gleam which was really an outcome of a continual searching look for customers, but which his simple clients took to be a prophetic light and felt comforted. The power of his eyes was considerably enhanced by their position—placed as they were between the painted forehead and the dark whiskers which streamed down his cheeks even a half-wit's eyes would sparkle in such a setting. To crown the effect he wound a saffron-coloured turban around his head. This colour scheme never failed. People were attracted to him as bees are attracted to cosmos or dahlia stalks. He sat under the boughs of a spreading tamarind tree which flanked a path running through the Town Hall Park. It was a remarkable place in many ways : a surging crowd was always moving up and down this narrow road morning till night. A variety of trades and occupations was represented all along its way-medicine-sellers, sellers of stolen hardware and junk, magicians and, above all, an auctioneer of cheap cloth, who created enough din all day to attract the whole town. Next to him in vociferousness came a vendor of fried groundnuts, who gave his ware a fancy name each day, calling it Bombay Ice-Cream one day, and on the next Delhi Almond, and on the third Raja's Delicacy, and so on and so forth, and people flocked to him. A considerable portion of this crowd dallied before the astrologer too.

7.9 उपयोगी पुस्तकें

- Bassnett, Susan and Trivedi, Harish (eds.) (1999), Post Colonial Translaiton: Theory and Practice
- Venuti, Lawrence (ed), (2000), The Translation Studies Reader, London & New York, Routledge.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY